

शङ्कन् 10, 113, 9. — b) am Ende eines comp. besagend, bedeutend, ausdrückend: अभिज्ञा° P. 3, 2, 112. भावकर्म° 6, 2, 150. AK. 3, 3, 2. H. 839. SARVADARĀNAS. 49, 6. 144, 15. 160, 8. 9. तद्वचनत्वात् weil es das besagt KĀTJ. ĀR. 1, 3, 4. 2, 8, 4. 7, 9, 12. 8, 3, 33. — c) ausgesprochen werdend: रक्तो वचनो मुखनासिकाभ्याम् RV. PRĀT. 13, 6. मुखनासिकावचनत्वमिह रक्तस्य विधीयते Comm. — 2) n. a) das Sprechen SĀMĀKHAJAK. 28. Aussprache: अथयामात्रं वचनं स्वराणाम् RV. PRĀT. 14, 4. समायाद्यानामत्ते संकृतावद्वचनम् AV. PRĀT. 4, 124. मुखनासिकावचनो ऽनुनासिकः P. 1, 1, 8. — b) das Apsagen, Hersagen, Aussagen: मत्त° KĀTJ. ĀR. 1, 7, 9. 10. 2, 33. LĀTJ. 7, 1, 7. 3, 7. संतानमुत्तमेन वचनेन ĀCV. ĀR. 5, 20, 5. 7. तद्वचनादाज्ञायस्य प्रामाण्यम् (ein berühmter und in seiner Auslegung streitiger Satz; vgl. NILAK. 8) KAN. 1, 1, 3. — c) Benennung, ausdrückliche Nennung, Bestimmung, Anführung: पप्रुवचनात् weil es पप्रु heisst KĀTJ. ĀR. 25, 9, 11. यथावचनम् je nach dem Ausdruck NIR. 1, 3. यतिरिति वचनाच्छ्रुतिरिति AIR. BR. 7, 9. ĀCV. ĀR. 1, 1, 26. KĀTJ. ĀR. 1, 5, 12. 7, 11. 22. 2, 7, 17. अ° 6, 37. अथचने wo nichts Besonderes bestimmt ist 1, 8, 45. अथवचने wenn अथ im Text steht 3, 25. 7, 3, 23. गुणा° 20, 7, 20. °विरोधौ Bestimmung und widersprechende Bestimmung 1, 8, 30. °प्रवृत्तौ 4, 3, 4. इति वचनात् weil es so heisst PĀR. GRHJ. 2, 2. JĀGŪ. 3, 226. P. 1, 2, 56. लिटः क्रिद्वचनार्थक्यम् das Erklären des लिट् für कित् PAT. zu P. 1, 2, 6. ईयसो वक्रुत्रौ पुंवद्वचनम् VĀRT. zu P. 1, 2, 48. — d) Aussage, Ausspruch, Worte, Rede AK. 1, 1, 5, 1. H. 241. द्वैधे बहूनां वचनं समेषु गुणिनां तथा । गुणिद्वैधे तु वचनं ग्राह्यं ये गुणावत्तमाः ॥ JĀGŪ. 2, 78. मुनि° VARĀH. BRH. S. 46, 99. गुरु° SARVADARĀNAS. 97, 1. 103, 20. 160, 19. स्मृति° PĀNĀKĀT. 164, 20. इदं वचनमब्रुवन् M. 1, 1. मनोवचनकर्मभिः 2, 236. MBH. 3, 2162. 2222. 2893. R. 1, 4, 17. 28. MEGH. 4, 29. 96. SARVADARĀNAS. 111, 11. PĀNĀKĀT. 140, 16. एतत्कार्यात्तमाणां केषांचिदालस्यवचनम् HIT. PR. 6, 9. 18, 19. VET. in LA. (III) 4, 4. 7, 1. वचनैरसताम् Spr. 2700. तथ्य° so v. a. Gelöbniß PĀNĀKĀT. 3, 1. परुष° barsche Rede führend VARĀH. BRH. S. 23, 17. असत्यवचना नार्थः MBH. 1, 3060. इत्युक्तवचनमेताम् 11, 596. ईष्यत्प्रगल्भवचना SĀH. D. 100. — e) Ausspruch so v. a. Rath, Geheiß: वचनशतमवचनकरे नष्टम् Spr. 714. वृद्धानां वचनं ग्राह्यम् 2891. तदस्यापि वचनं संग्राह्यम् PĀNĀKĀT. 138, 13. यस्य वचनात् HIT. 13, 10. 62, 20, v. 1. 72, 14. काकवचनेन 23, 9. नरेन्द्रवचनासक्ताः R. 1, 7, 9. श्रेयो मे भर्तृवचनं न जीवितमिहात्मनः 3, 48, 16. ब्रह्मणो वचनात् MBH. 1, 1153. 5374. 6013. 3, 2682. 2853. 3, 6047. R. 1, 1, 11. 56. 68. 11, 13. 2, 64, 16. पितुर्वचननिर्देशात् 1, 1, 24. स्यास्पति वचने तव (vgl. वचनेस्थित) so v. a. sie werden dir gehorchen 2, 24, 15. मया कर्तव्यं वचनं पितुः 14. HIT. 62, 19. — f. वचनात् und वचनेन (selten) so v. a. im Namen von: अरिगणं ब्रूहि कौसल्याम् — सीतायाः सूत मम च वचनात् R. 2, 32, 30. महचनात् — वच्यौ पौरौ महात्मनः 38, 13. MBH. 3, 16149. 3, 7510. MRĀKĪH. 133, 12. ममद्वचनाडुच्यतां सारथिः ĀK. 28. 18. 33, 9. 39, 15. 80, 23. VIKR. 37, 9. MEGH. 99. MĀRK. P. 66, 24. भरतः कुशलं वाच्यो वाच्यो महचनेन च R. 2, 38, 18. MBH. 4, 229. — g) Laut, Stimme: वचनेन व्यवेतानां संयोगत्वं विरुन्धते Schol. zu AV. PRĀT. 1, 101. तद्वचनं प्रत्यभिज्ञाय HIT. 14, 20. मृगतपाभिः — अन्धभूतवल्गुवचनभिः VARĀH. BRH. S. 48, 14. मधुरवचना सारिका MEGH. 83. — h) grammatische Zahl P. 1, 2, 51. 2, 3, 46. VOP. 1, 11. 24, 6. — i) trockener Ingwer ĀBDAĀ. im ĀKDR. — Vgl. अ°, एक°, द्वि°, पर्याय°,

पुनर्वचन, प्रतिकूल°, प्राग्वचन, प्रिय°, वक्रु°, वृद्ध°, भाव°, भिन्न°, मूल°, लोक°, विशेष°, सत्य°, सु°.

वचनकर adj. (f. ई) P. 3, 2, 20, Sch. einen Rath befolgend, folgsam, gehorsam Spr. 714.

वचनकारिन् adj. dass. MBH. 3, 14867. पितुः R. 2, 21, 33. R. GORR. 2, 127, 15.

वचनगोचर adj. einen Gegenstand der Besprechung bildend BHĀG. P. 5, 3, 12.

वचनप्राक्त्विन् adj. Jmdes Worte beherzigend, folgsam, gehorsam RAMĀN. zu AK. 3, 1, 24 nach ĀKDR.

वचनपटु adj. in der Rede geschickt, beredt VARĀH. BRH. S. 101, 9. PĀNĀKĀT. 24, 20.

वचनानुग (वचन + अ°) adj. sich nach Jmdes Worten richtend, folgsam, gehorsam MĀRK. P. 21, 55.

वचनौवत् (von वचन) adj. redfertig RV. 9, 68, 1.

वचनीकर (वचन + 1. कर) dem Tadel aussetzen: °कृत R. 7, 47, 4. Comm.: यलोप आर्षः । वचनीयो निन्ध्यः कृतः.

वचनीय (von वच्) 1) adj. a) zu sagen, zu sprechen, was gesagt werden darf: किं वचनीयमत्र so v. a. was soll man hierüber viele Worte verlieren? Spr. 4200. न तानि वचनीयानि मया देवि तवाग्रतः R. 7, 47, 12. वदिष्ववचनीयेषु M. 8, 269. — b) zu benennen: अश्रुः स वचनीयः स्यात् NIR. 1, 12. — c) Jmdes (gen.) Tadel unterliegend HARIV. 3267. — 2) n. Vorwurf, Tadel R. 7, 48, 13. KUMĀRAS. 4, 21. 3, 82. UTTARAR. 21, 11 (28, 13). एष वचनीयान्मुक्त्वा ऽस्मि ऀक. 111, 7. द्वा निशाया वचनीयेदोषम् MRĀKĪH. 38, 17. — Vgl. वक्तव्य, वाच्य.

वचनीयता (von वचनीय) f. Tadelhaftigkeit H. 270. HALĀJ. 1, 147. MRĀKĪH. 46, 23. Spr. 393.

वचनेस्थित adj. gehorsam, folgsam AK. 3, 1, 24. H. 432; vgl. स्यास्पति वचने तव R. 2, 24, 15.

वचर m. 1) Bösewicht. — 2) Hahn (von वच्) MED. f. 209.

वचलु m. ĀBDAĀ. im ĀKDR. = शत्रु nach ĀKDR., offence, fault WILSON.

1. वचम् (von वच्) n. 1) Rede, Wort, Sprache AK. 1, 1, 5, 1. H. 241. न मृष्यते वचः RV. 1, 143, 2. प्रणावृद्धवांसि मे 3. अश्रुमानं चिद्ये विंभिर्दुर्वचैभिः 4, 16, 6. 6, 39, 2. वृहडं गापिषे वचः 7, 96, 1. 8, 50, 1. अस्तेन्या वः पाणयो वचंसि 10, 108, 6. नव 2, 18, 3. अद्रोघ 3, 14, 6. दैव्य 4, 1, 13. मधुमतम 5, 11, 5. त्रैष्टुभ 29, 6. अन्त 7, 104, 8. सञ्जासञ्च वचंसौ 12. उग्र VS. 3, 8. 9, 5. स्तोतुः AV. 6, 2, 1. 4, 7, 4. 5, 13, 1. ĀT. BR. 6, 1, 2, 15. वचोविपरिलोप (so zu verbinden; die Betonung in diesem Buche häufig fehlerhaft) 14, 7, 2, 26. इन्द्रस्य KAUC. 6. Auffallend ist die Form वचम् am Ende eines Pāda für den instr.: दिवित्मता वचः RV. 1, 26, 2. नव्यसा वचः 2, 31, 5. 6, 48, 11. 8, 39, 2 (नव्यसा वचसा 6, 62, 5). द्रोघाय चिद्वचसं आनवाप 6, 62, 9 ist Tmesis für द्रोघवचसे. — मुनिवचश्चेद्म् VARĀH. BRH. S. 46, 63. 71. 34, 110. प्रगालो ऽब्रवीद्वचः MBH. 1, 5581. 3, 1804. तं तथैत्यब्रवीद्वचः 2835. 2104. R. 1, 4, 8. 36. RAGH. 2, 41. उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः 3, 25. अत्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्ति (तनय) ĀK. 176. रघुणा समीरितं वचः RAGH. 3, 47. Spr. 2701. KATHĀS. 18, 300. 321. PĀNĀKĀT. 167, 7. HIT. 12, 1. VET. in LA. (III) 88, 7. अदृढतर MBH. 3, 2646. अन्वर्थक AK. 1, 1, 5, 16. HALĀJ. 1, 150. अनिवृद्ध 139. वक्र Spr. 730. pl. VIKR. 30. ad MEGH. 112. — 2) Ausspruch so v. a. Rath, Geheiß: वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्